



वार्षिक रिपोर्ट २०२३-२०२४

डिज़ाइन इनोवेशन सेंटर

लेडी इरविन कॉलेज, स्पोक डीआईसीडीयू

ANNUAL REPORT 2023 - 2024

DESIGN INNOVATION CENTRE

Lady Irwin College, SPOKE DICDU



समन्वयक: प्रो. सुषमा गोयल/ **Coordinator:** Prof. Sushma Goel

डी.आई.सी., लेडी इरविन कॉलेज की स्थापना का वर्ष: २०१९/ **Year of Establishment of DIC, Lady Irwin College: 2019**

डिजाइन इनोवेशन सेंटर (डी.आई.सी.) की स्थापना राष्ट्रीय डिजाइन नवाचार पहल (एन.आई.डी.आई.) योजना के तहत एम.एच.आर.डी. द्वारा एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में की गई है। यह छात्रों, शिक्षकों और नागरिकों के लिए उत्पाद या प्रक्रिया नवाचारों के लिए एक मंच है, जहाँ वे ऐसे विचार दे सकते हैं जिन्हें उत्पाद/प्रक्रियाओं के रूप में विकसित किया जा सकता है।

Design Innovation Centre (DIC) has been established under National Initiative for Design Innovation (NIDI) Scheme as a flagship programme by MHRD. It is a platform for product or process innovations for students, faculty and citizens to give ideas that can be developed as products/ processes.

1.1 इनोवेशन वीक 2024 (5 -18 मार्च, 2024)/ INNOVATION WEEK 2024 (5th -18th March, 2024)

1.1.1 उद्घाटन सत्र (5 मार्च, 2024)/ Inaugural Session (5th March, 2024):

इस श्रृंखला की शुरुआत दीप प्रज्वलन समारोह और प्रोफेसर अनूपा सिद्धू, प्रोफेसर सुषमा गोयल, डॉ. सुषमा शर्मा और श्री बायजू कुरियन जैसे प्रतिष्ठित अतिथियों के भाषणों से हुई। उन्होंने नवाचार, स्थिरता और सीएसआर पहलों के महत्व पर प्रकाश डाला।

The series began with a lamp lighting ceremony and speeches by distinguished guests like Prof. Anupa Siddhu, Prof. Sushma Goel, Dr. Sushma Sharma, and Mr. Byju Kurian. They highlighted

the importance of innovation, sustainability, and CSR initiatives.



उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्वलन, लेडी इरविन कॉलेज की निदेशक प्रोफेसर अनुपा सिद्धू और हमारे सम्मानित अतिथियों का संबोधन

The inaugural session in progress depicting lamp lighting, address by Prof. Anupa Siddhu, Director of Lady Irwin College, and our esteemed guests

सत्र 1/ Session 1

डिजाइन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: डॉ. सौरभ तिवारी ने एआई की परिवर्तनकारी क्षमता पर चर्चा की, जिसके बाद प्रोफेसर सुषमा गोयल द्वारा संचालित एआई के अनुप्रयोगों और नैतिक विचारों पर एक पैनल चर्चा हुई।

Artificial Intelligence in Design: Dr. Saurabh Tiwari discussed AI's transformative potential, followed by a panel discussion on AI's applications and ethical considerations moderated by Prof. Sushma Goel.



इनोवेशन सीरीज की संस्थापक और लेडी इरविन कॉलेज की उप-प्राचार्य प्रोफेसर सुषमा गोयल द्वारा संचालित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर सत्र चल रहा है

The session on Artificial Intelligence in progress moderated by Prof. Sushma Goel, Founder of the Innovation Series and Vice-Principal, Lady Irwin College

सत्र 2/ Session 2

पत्ती प्लेट बनाने की कार्यशाला: डीआईसी टीम: सुश्री पल्लवी धीर और सुश्री आयुषी ने स्थिरता पर जोर देते हुए, पत्तियों से पर्यावरण के अनुकूल डिस्पोजेबल प्लेट बनाने पर एक व्यावहारिक कार्यशाला आयोजित की।

Leaf Plate Making Workshop: The DIC team: Ms. Pallavi Dheer and Ms. Ayushi conducted a hands-on workshop on making eco-friendly disposable plates from leaves, emphasizing sustainability.



डीआईसी टीम द्वारा लीफ प्लेट बनाने का सत्र जारी

Leaf plate making session in progress conducted by the DIC team

1.1.2 अपशिष्ट पदार्थों से उत्पाद विकास पर कार्यशाला (6 मार्च, 2024)/ Workshop on Product

Development from Waste Material (6th March, 2024): प्रतिभागियों ने बेकार कार्डबोर्ड और अंडे की ट्रे से फूलदान बनाना सीखा, जिससे पुनर्चक्रण और रचनात्मकता को बढ़ावा मिला
 Participants learned to create vases from waste cardboard and egg trays, promoting recycling and creativity.



छात्र कार्डबोर्ड और अंडे की टोकरी का उपयोग करके फूलदान विकसित करने में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं
 Students actively engaged in developing vases using cardboard and egg crate

1.1.3 खाद बनाने पर कार्यशाला (7 मार्च, 2024)/Workshop on Compost Making (7th March, 2024):

डॉ. राधा गोयल ने अपशिष्ट प्रबंधन के मुद्दों पर चर्चा करने और प्रतिभागियों को खाद बनाने की तकनीक के बारे में शिक्षित करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की।

Dr. Radha Goyal conducted a workshop addressing waste management issues and educating participants on composting techniques.

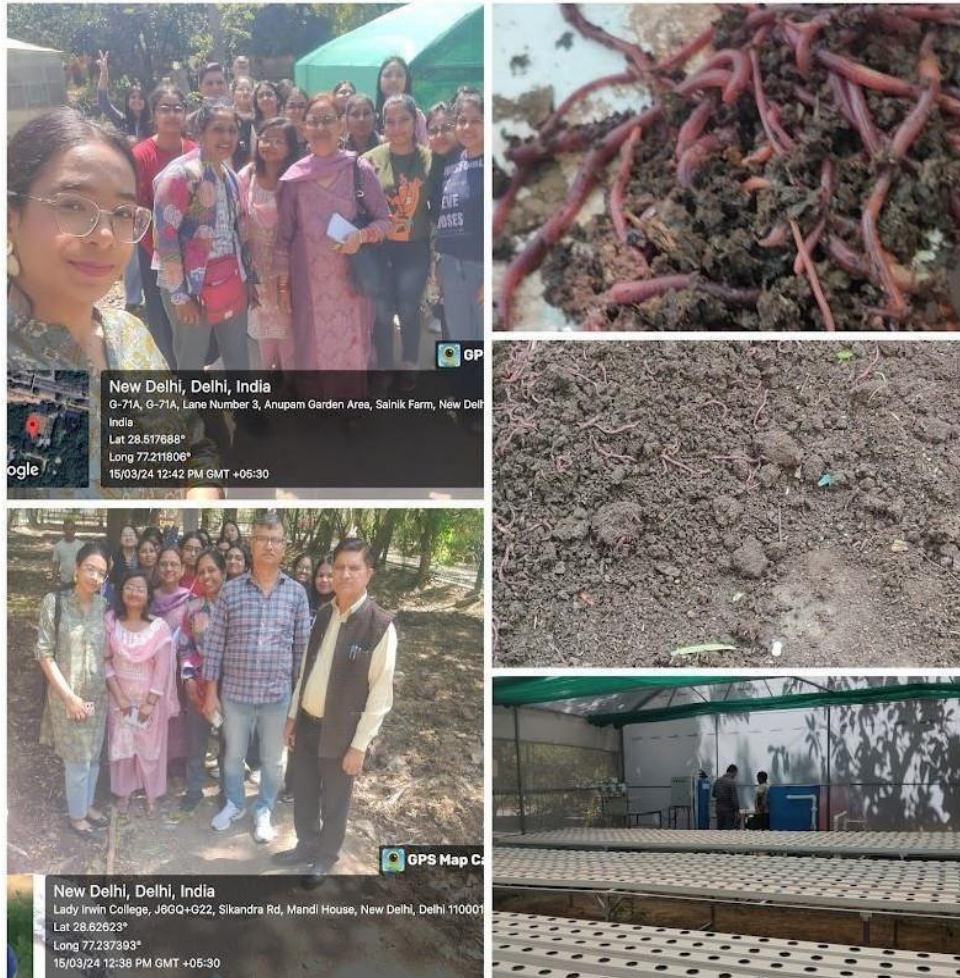


डॉ. राधा गोयल, उप निदेशक, आईपीसीए खाद बनाने पर एक सत्र आयोजित करती हुई
Dr. Radha Goyal, Deputy Director, IPCA conducting a session on compost making

1.1.4 हौज रानी नर्सरी का दौरा (15 मार्च, 2024)/Visit to Hauz Rani Nursery (15th March, 2024):

छात्रों ने वर्मिकंपोस्टिंग पर एक कार्यशाला में भाग लिया और पौधों के स्वास्थ्य और खेती की तकनीकों के साथ-साथ जैविक खाद बनाने की विधियों के बारे में सीखा।

Students attended a workshop on vermicomposting and learned about organic composting methods along with plant health and farming techniques.



केंचुआ खाद पर कार्यशाला के लिए हौज रानी नर्सरी में छात्र, संकाय और डीआईसी टीम

Students, Faculty and DIC team at the Houz Rani Nursery for a workshop on vermicomposting

1.1.5 उत्पादों की बिक्री (18 मार्च, 2024)/ Sale of Products (18th March, 2024):

श्रृंखला का समापन आरएमडीए के छात्रों द्वारा उनके स्टार्टअप "जेनेसिस" के तहत बनाए गए उत्पादों और डिज़ाइन इनोवेशन सेंटर (डीआईसी) के उत्पादों की सफल बिक्री के साथ हुआ, जिसमें श्रृंखला के व्यावहारिक परिणामों को प्रदर्शित किया गया।

The series concluded with a successful sale of products made by RMDA students under their startup "Genesis" and products from the Design Innovation Centre (DIC), showcasing the practical outcomes of the series.



लेडी इरविन कॉलेज की निदेशक प्रोफेसर अनुपा सिद्धू और स्टॉल पर मौजूद छात्र और डीआईसी टीम द्वारा उत्पाद बिक्री का उद्घाटन

Inauguration of product sale by Prof. Anupa Siddhu, Director, Lady Irwin College and the student and DIC team manning the stalls

इनोवेशन सीरीज़ में एआई, संधारणीय उत्पाद विकास, अपशिष्ट प्रबंधन और जैविक खेती सहित विविध विषयों को शामिल किया गया। इसने नवाचार, संधारणीयता और उद्यमिता को बढ़ावा देते हुए छात्रों और प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभवों में प्रभावी रूप से शामिल किया।

The Innovation Series covered a diverse range of topics including AI, sustainable product

development, waste management, and organic farming. It effectively engaged students and participants in hands-on experiences while promoting innovation, sustainability, and entrepreneurship.

1.2 कॉपीराइट/डिज़ाइन पंजीकरण (प्रमाणपत्र)/ COPYRIGHTS/ DESIGN REGISTRATIONS (Certificated)

1.2.1 बौद्धिक संपदा अधिकार (कॉपीराइट)/ Intellectual Property Rights (Copyright)

● शब्दखेल

- यह खेल भारतीय पारंपरिक खेल 'टिक टैक टो' का समकालीन संस्करण है, जिसे लोकप्रिय रूप से 'जीरो-कट्टा' कहा जाता है।
- खासियत
 - यह एक बहुउद्देश्यीय उत्पाद है।
 - इसका उपयोग खेल के साथ-साथ भंडारण बैग के रूप में भी किया जाता है।
 - यह भाषा और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है।
 - यह उत्पाद पारंपरिक गोंड कला को बढ़ावा देगा।
 - यह एक हल्की सामग्री है और इसे ले जाना आसान है।
 - यह एक पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद है क्योंकि बैग को नवीनीकृत किया गया है और अक्षर मिश्रित सामग्रियों से बने हैं।

● Shabdkhel

- The game is a contemporary version of the Indian Traditional Game, 'Tic Tac Toe' popularly called 'zero-katta'.
- USP
 - It is a multi-purpose product.
 - It is used as a game as well as a storage bag.
 - It promotes language & cognitive development.
 - This product will promote traditional gond art.
 - It is a lightweight material and easy to carry.
 - It is an eco-friendly product as the bag is refurbished and letters are made of composite materials.



● लेटर प्लैटर

- यह गेम उपन्यास "द दा विंची कोड" के क्रिप्टेक्स से प्रेरित है जो एक पहेली-आधारित लॉक कंटेनर है। यह टॉय स्टैकिंग रिंग टॉस से भी प्रेरित है।
- यह खिलौना 4-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त है,

लेकिन सभी उम्र के लोग इसके साथ खेल सकते हैं। आंगनवाड़ी केंद्र, डेकेयर सेंटर आदि। इस खिलौने को उम्र के हिसाब से और भी जटिल बनाया जा सकता है और अल्जाइमर रोग से पीड़ित लोग भी इस खेल को खेल सकते हैं क्योंकि यह मस्तिष्क को उत्तेजित करता है।

- **Letter Platter**

- This game was inspired by Cryptex from the novel “The Da Vinci Code” which is a riddle-based locked container. It is also inspired by the toy stacking ring toss.
- This toy is best suited for children aged 4-6 but people of all ages can play with it. Anganwadi centers, daycare centers, etc. This toy can also be made more complex according to age and also people with Alzheimer's disease can also play this game as it stimulates the brain.



- **रामायण बोर्ड गेम**

- यह गेम सभी को यह समझने में मदद करेगा कि पर्यावरण क्यों महत्वपूर्ण है और उन्हें पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ जीवन जीने के लिए आवश्यक निर्माण सामग्री प्रदान करता है। यह उनके सामाजिक और संज्ञानात्मक कौशल में भी सुधार करेगा।

- **Ramayana Board Game**

- The game will help everyone understand why the environment is important and provides them with the building blocks they need to live eco- friendly and sustainable lives. It will also improve their social and cognitive skills.



- बुजुर्गों के लिए देखभाल संस्थानों के मूल्यांकन हेतु रूपरेखा / Framework for evaluating care institutions for Elderly



- इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के लिए स्थिरता ऑडिट मानदंड/ Sustainability Audit Criteria for Electronic Products



1.2.2 बौद्धिक संपदा अधिकार (डिज़ाइन पंजीकरण)/Intellectual Property Rights (Design Registration)

- पूजा लैंप (4-सितंबर-2023)/ Worship Lamp (4-Sep-2023)



पूजा लैंप (डिजाइन पंजीकरण)/ Worship Lamp (Design Registration)

1.3 संवेदीकरण कार्यक्रम/ SENSITIZATION PROGRAMMES

1.3.1 आत्मनिर्भर भारत सेंटर फॉर डिज़ाइन, लाल किला का दौरा

दिनांक: 16 जनवरी 2024 **स्थान:** आत्मनिर्भर भारत सेंटर फॉर डिज़ाइन

Visit to Aatmanirbhar Bharat Centre For Design, Red Fort

Date: 16 January 2024

Venue: Aatmanirbhar Bharat Centre For Design



परिचय:

हमें आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र में भारतीय शिल्प प्रदर्शनी में भाग लेने का सौभाग्य मिला, जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों के पारंपरिक शिल्पों की समृद्ध झलकियाँ प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी का उद्देश्य स्वदेशी शिल्प कौशल का जश्न मनाना और उसे बढ़ावा देना था, जिससे कारीगर समुदाय में गर्व और आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा मिले।

Introduction:

We had the privilege of attending the Indian Craft Exhibition at the Aatmanirbhar Bharat Centre For Design, which showcased the rich tapestry of traditional crafts from various regions of India. The exhibition aimed to celebrate and promote indigenous craftsmanship, fostering a sense of pride and self-sufficiency in the artisan community.

आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र का अवलोकन:

आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र इस प्रदर्शनी के लिए एक आदर्श स्थल रहा। दिल्ली के लाल किले के एल1 बैरक में स्थित यह केंद्र पारंपरिक कला और शिल्प को बढ़ावा देने का केंद्र है, जो डिजाइन और शिल्प कौशल में आत्मनिर्भरता के महत्व पर जोर देता है।

Overview of Aatmanirbhar Bharat Centre For Design:

The Aatmanirbhar Bharat Centre For Design served as an ideal venue for this exhibition. Located in L1 Barrack, Red Fort, Delhi, the center is a hub for promoting traditional arts and crafts, emphasizing the importance of self-reliance in design and craftsmanship.

प्रदर्शनी का लेआउट:

प्रदर्शनी को बहुत ही सावधानी से आयोजित किया गया था, जिसमें विभिन्न वर्गों को पारंपरिक भारतीय शिल्प के विभिन्न रूपों के लिए समर्पित किया गया था। इनमें हथकरघा वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी का काम, धातु का काम और बहुत कुछ शामिल था। प्रत्येक खंड ने भारत की सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता के बारे में एक अनूठी जानकारी प्रदान की।

Exhibition Layout:

The exhibition was meticulously organized, with different sections dedicated to various forms of traditional Indian crafts. These included handloom textiles, pottery, woodwork, metalwork, and more. Each section provided a unique insight into the cultural and artistic diversity of India.

प्रदर्शनी की मुख्य विशेषताएं:

- स्वदेशी खिलौने और खेल:**
एक खंड स्वदेशी खिलौनों और खेलों को समर्पित था, जिसमें न केवल भारतीय संस्कृति की चंचलता का जश्न मनाया गया, बल्कि इन वस्तुओं को बनाने में शामिल अद्वितीय शिल्प कौशल को भी प्रदर्शित किया गया।
- वस्त्र और बुनाई:**
वस्त्र खंड में साड़ी, शॉल और परिधानों सहित हाथ से बुने हुए कपड़ों की एक शानदार श्रृंखला प्रदर्शित की गई।
- लकड़ी और धातु शिल्प:**
लकड़ी और धातु के काम के अनुभागों में शिल्प कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण प्रदर्शित किए गए। जटिल नक्काशीदार लकड़ी के फर्नीचर और धातु की कलाकृतियों ने समकालीन डिजाइनों में परंपरा और नवीनता के मिश्रण को प्रदर्शित किया।
- भौगोलिक संकेत वाले उत्पाद:**
एक समर्पित खंड ने आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भौगोलिक संकेतों के साथ हस्तशिल्प, वस्त्र और खाद्य पदार्थों जैसे उत्पादों का प्रदर्शन किया। इस खंड ने इन अद्वितीय क्षेत्रीय उत्पादों को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व पर जोर दिया।
- पेपर माचे कलात्मकता:**
एक विशेष आकर्षण पेपर माचे की जटिल कला थी, जिसमें कारीगरों ने मूर्तियां, मुखौटे और सजावटी सामान प्रदर्शित किए। इस खंड ने इस पारंपरिक शिल्प की बहुमुखी प्रतिभा और भारत की सांस्कृतिक विरासत में इसके अनूठे स्थान का जश्न मनाया।
- प्रकृति और अपशिष्ट से डिज़ाइन की गई सामग्री:**
इस खंड ने प्राकृतिक और पुनर्नवीनीकरण सामग्री से तैयार की गई नवीन कृतियों को प्रदर्शित किया, भौगोलिक संकेतों के माध्यम से विशिष्ट क्षेत्रों से जुड़े उत्पादों पर जोर दिया।

Highlights of the Exhibition:

1. Indigenous Toys and Games:

A section was dedicated to indigenous toys and games which not only celebrated the playfulness of Indian culture but also showcased the unique craftsmanship involved in creating these items.

2. Textiles and Weaving:

The textile section showcased a stunning array of handwoven fabrics, including sarees, shawls, and garments.

3. Wood and Metal Crafts:

The woodwork and metalwork sections displayed exquisite examples of craftsmanship. Intricately carved wooden furniture and metal artifacts demonstrated the fusion of tradition and innovation in contemporary designs.

4. Products with Geographical Indications:

A dedicated segment showcased products such as handicrafts, textiles, and food items with officially recognized Geographical Indications. This section emphasized the cultural and economic significance of preserving and promoting these unique regional products.

5. Paper Mâché Artistry:

A special highlight was the intricate art of paper mâché, with artisans showcasing sculptures, masks, and decorative items. This segment celebrated the versatility of this traditional craft and its unique place in the cultural heritage of India.

6. Materials Designed from Nature and Waste:

This section showcased innovative creations crafted from natural and recycled materials, emphasizing products tied to specific regions through Geographical Indications.



लाल किला स्थित आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र में भारतीय शिल्प प्रदर्शनी
The Indian Craft Exhibition at the Aatmanirbhar Bharat Centre for Design, Red Fort



शिल्प इनक्यूबेशन परियोजना में विभिन्न शिल्प रूपों का प्रदर्शन

Craft Incubation Project showcasing various craft forms

प्रभाव और महत्व:

आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र में भारतीय शिल्प प्रदर्शनी ने पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलाकारों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करके, प्रदर्शनी ने स्थानीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान दिया और स्वदेशी शिल्प कौशल का समर्थन करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

Impact and Significance:

The Indian Craft Exhibition at the Aatmanirbhar Bharat Centre For Design played a pivotal role in promoting and preserving traditional crafts. By providing a platform for artisans to showcase their skills, the exhibition contributed to the economic empowerment of local communities and highlighted the importance of supporting indigenous craftsmanship.

निष्कर्ष:

अंत में, आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र में भारतीय शिल्प प्रदर्शनी एक आकर्षक अनुभव था, जिसमें भारतीय शिल्प की जीवंत विरासत को प्रदर्शित किया गया। इस आयोजन ने आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और राष्ट्र की कलात्मक प्रतिभाओं का जश्न मनाने के अपने उद्देश्य को सफलतापूर्वक हासिल किया। इस तरह की पहल हमारी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पारंपरिक शिल्प की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं।

Conclusion:

In conclusion, the Indian Craft Exhibition at the Aatmanirbhar Bharat Centre For Design was a captivating experience that showcased the vibrant heritage of Indian crafts. The event successfully achieved its objective of promoting self-reliance and celebrating the artistic talents of the nation.

Such initiatives are crucial in preserving our cultural identity and ensuring the sustainability of traditional crafts for future generations.

1.3.2 आदि महोत्सव, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम का दौरा

यात्रा की तिथि: 13 फरवरी

स्थान: मेजर ध्यानचंद स्टेडियम

Visit to Aadi Mahotsav, Major Dhyanchand Stadium

Date of Visit: 13 February

Venue: Major Dhyanchand Stadium

परिचय

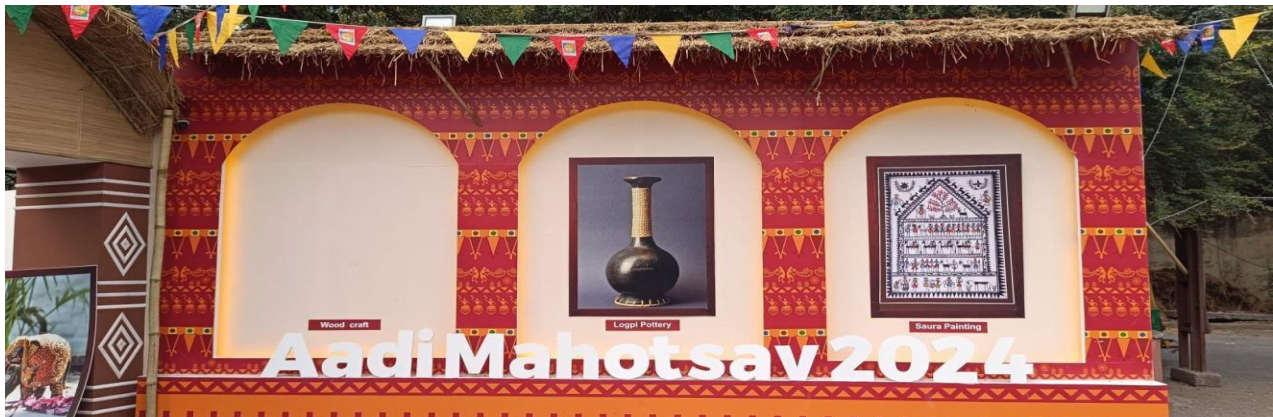
आदि महोत्सव, जिसे राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव के रूप में भी जाना जाता है, एक वार्षिक कार्यक्रम है जो भारत के जनजातीय समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला, शिल्प और व्यंजनों को प्रदर्शित करता है।

13 फरवरी 2024 को, सीनियर डिज़ाइन फेलो के साथ डिज़ाइन छात्रों के एक समूह ने दिल्ली के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में आयोजित आदि महोत्सव का दौरा किया। इसका आयोजन जनजातीय मामलों के मंत्रालय के तहत ट्राइफेड (भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास महासंघ) द्वारा किया गया था।

Introduction

The Aadi Mahotsav, also known as the National Tribal Festival, is an annual event that showcases the rich cultural heritage, art, crafts, and cuisine of India's tribal communities.

On 13 February 2024, a group of design students accompanied by Senior Design Fellows visited the Aadi Mahotsav held at Major Dhyan Chand Stadium, Delhi. It was organized by TRIFED (Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India) under the Ministry of Tribal Affairs.



मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में आदि महोत्सव राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव

Aadi Mahotsav National Tribal Festival at Major Dhyanchand Stadium

आने का उद्देश्य

हमारी यात्रा का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को भारत की विविध जनजातीय संस्कृतियों और शिल्पों से परिचित कराना था, जो उनकी आगामी डिजाइन परियोजनाओं के लिए प्रेरणा के रूप में काम कर सकते हैं। हमारा लक्ष्य छात्रों को पारंपरिक कला रूपों, शिल्प तकनीकों और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों में प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

Purpose of Visit

The primary objective of our visit was to expose students to the diverse tribal cultures and crafts of India, which could serve as inspiration for their upcoming design projects. We aimed to provide students with firsthand insights into traditional art forms, craft techniques, and indigenous knowledge systems.

घटना अवलोकन

मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में आदि महोत्सव एक हलचल भरी गतिविधि का केंद्र था, जिसमें भारत भर के विभिन्न आदिवासी समुदायों के कारीगरों द्वारा रंग-बिरंगे स्टॉल लगाए गए थे। माहौल जीवंत था, पारंपरिक संगीत और नृत्य प्रदर्शन ने उत्सव के माहौल को और भी बढ़ा दिया।

Event Overview

The Aadi Mahotsav at Major Dhyan Chand Stadium was a bustling hub of activity, with colorful stalls set up by artisans from various tribal communities across India. The atmosphere was lively, with traditional music and dance performances adding to the festive ambiance.

मुख्य विशेषताएं

1. लकड़ी और बांस में शिल्प कौशल:

छात्रों ने लकड़ी और बांस शिल्प का प्रदर्शन देखा, कारीगरों को उत्कृष्ट उपयोगिता और सजावटी वस्तुओं को बनाते हुए देखा। उन्होंने इन सामग्रियों के टिकाऊ उपयोग और आदिवासी जीवन शैली में उनकी भूमिका के बारे में सीखा, जिससे उन्हें उत्पाद डिजाइन में नवीन दृष्टिकोण तलाशने की प्रेरणा मिली।

2. जनजातीय आभूषण और धातुकर्म:

छात्र कार्यक्रम में प्रदर्शित पारंपरिक आभूषणों से मंत्रमुग्ध हो गए, जो अद्वितीय मेटलवर्क तकनीकों का उपयोग करके तैयार किए गए थे। उन्होंने जनजातीय आभूषणों के पीछे के सांस्कृतिक प्रतीकवाद को समझने के लिए कारीगरों के साथ काम किया, जिससे जनजातीय विरासत में निहित समकालीन आभूषण डिजाइन के लिए विचारों को बढ़ावा मिला।

3. मिट्टी के बर्तन और चीनी मिट्टी की चीज़ें:

इस यात्रा में विभिन्न आदिवासी समुदायों के कुम्हारों के साथ बातचीत, विभिन्न मिट्टी की बर्तन शैलियों और मिट्टी की कलाकृतियों का प्रदर्शन शामिल था। छात्रों ने आदिवासी अनुष्ठानों में फायरिंग के तरीकों, पारंपरिक डिजाइनों और मिट्टी के बर्तनों के आध्यात्मिक महत्व के बारे में सीखा, जिससे सिरेमिक कलात्मकता में उनकी रुचि जागृत हुई।

4. चित्रकारी और कला रूप:

वॉल, गोंड और मधुबनी जैसी स्वदेशी चित्रकला शैलियों ने छात्रों का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने इन आदिवासी कला रूपों में अंतर्निहित कथा तत्वों और कलात्मक अभिव्यक्तियों का पता लगाया। उन्होंने

दृश्यों के माध्यम से कहानी कहने और जैविक रंगों के उपयोग की सराहना की।

5. पाक परंपराएँ:

छात्रों ने अद्वितीय स्वाद और खाना पकाने की तकनीक की खोज करते हुए प्रामाणिक जनजातीय व्यंजनों का स्वाद लिया। उन्होंने विभिन्न जनजातियों की पाक विरासत में अंतर्दृष्टि प्राप्त की, जिसने खाद्य सौंदर्यशास्त्र और डिजाइन में सांस्कृतिक पहचान पर चर्चा को प्रभावित किया।

Key Highlights

1. Craftsmanship in Wood and Bamboo:

Students witnessed demonstrations of wood and bamboo craft, observing artisans carve out exquisite utility and decorative items. They learned about the sustainable use of these materials and their role in tribal lifestyles, inspiring them to explore innovative approaches in product design.

2. Tribal Jewelry and Metalwork:

Students were fascinated by the traditional jewelry displayed at the event, crafted using unique metalwork techniques. They engaged with artisans to understand the cultural symbolism behind tribal ornaments, sparking ideas for contemporary jewelry design rooted in tribal heritage.

3. Pottery and Ceramics:

The visit included interactions with potters from different tribal communities, showcasing diverse pottery styles and clay artworks. Students learned about firing methods, traditional designs, and the spiritual significance of pottery in tribal rituals, igniting their interest in ceramic artistry.

4. Painting and Art Forms:

Indigenous painting styles such as Warli, Gond, and Madhubani caught the attention of students, who explored the narrative elements and artistic expressions embedded in these tribal art forms. They appreciated the use of organic pigments and storytelling through visuals.

5. Culinary Traditions:

Students savored authentic tribal cuisines, discovering unique flavors and cooking techniques. They gained insights into the culinary heritage of different tribes, which influenced discussions on food aesthetics and cultural identity in design.

मुख्य सीख:

- 1. पारंपरिक तकनीकें:** हमने आदिवासी कारीगरों द्वारा नियोजित पारंपरिक तकनीकों और शिल्प कौशल, जैसे जटिल बुनाई पैटर्न, प्राकृतिक रंगाई के तरीके और टिकाऊ प्रथाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त की।
- 2. सांस्कृतिक संरक्षण:** इस कार्यक्रम में भारत की जनजातीय विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला गया, जिसे अक्सर मुख्यधारा के समाज में हाशिए पर रखा जाता है और कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है। अपनी कला और शिल्प के माध्यम से, आदिवासी समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान का जश्न मनाने और स्थायी आजीविका उत्पन्न करने में सक्षम हैं।
- 3. डिजाइन के लिए प्रेरणा:** डिजाइन के छात्रों के रूप में, हम आदिवासी कारीगरों द्वारा प्रदर्शित रचनात्मकता, शिल्प कौशल और विस्तार पर ध्यान देने से प्रेरित थे। आदि महोत्सव ने हमारी अपनी डिजाइन परियोजनाओं के लिए प्रेरणा का एक समृद्ध स्रोत के रूप में काम किया, जिससे हमें पारंपरिक तकनीकों का पता लगाने और अपने काम में सांस्कृतिक रूपांकनों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

Key Learnings:

- 1. Traditional Techniques:** We gained valuable insights into the traditional techniques and craftsmanship employed by tribal artisans, such as intricate weaving patterns, natural dyeing methods, and sustainable practices.
- 2. Cultural Preservation:** The event highlighted the importance of preserving and promoting India's tribal heritage, which is often marginalized and underrepresented in mainstream society. Through their art and craft, tribal communities are able to celebrate their cultural identity and generate sustainable livelihoods.
- 3. Inspiration for Design:** As design students, we were inspired by the creativity, craftsmanship, and attention to detail exhibited by tribal artisans. The Aadi Mahotsav served as a rich source of inspiration for our own design projects, encouraging us to explore traditional techniques and incorporate cultural motifs into our work.

निष्कर्ष

आदि महोत्सव का दौरा छात्रों के लिए एक परिवर्तनकारी अनुभव था, जिससे रचनात्मकता, सांस्कृतिक जागरूकता और नैतिक डिजाइन सोच को बढ़ावा मिला। इसने उन्हें भारत की समृद्ध जनजातीय विरासत में निहित डिजाइन संभावनाओं के एक स्पेक्ट्रम का पता लगाने में सक्षम बनाया। हम इस तरह के समृद्ध कार्यक्रम के आयोजन के लिए ट्राइफेड के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं और इन सीखों को अपने डिजाइन पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए तत्पर हैं।

Conclusion

The visit to Aadi Mahotsav was a transformative experience for the students, fostering creativity, cultural awareness, and ethical design thinking. It enabled them to explore a spectrum of design possibilities rooted in India's rich tribal heritage. We extend our gratitude to TRIFED for organizing such an enriching event and look forward to integrating these learnings into our design curriculum.

सिफारिशों

हम अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों में आदि महोत्सव जैसे आयोजनों में अधिक अनुभवात्मक शिक्षण दौरों को शामिल करने की सलाह देते हैं। ये जुड़ाव छात्रों को टिकाऊ डिज़ाइन, सांस्कृतिक विविधता और डिज़ाइन के माध्यम से सामुदायिक सशक्तिकरण में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इन अनुभवों का पोषण करके, हमारा लक्ष्य सामाजिक रूप से जिम्मेदार डिजाइनरों को तैयार करना है जो स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का सम्मान और प्रचार करते हैं।

Recommendations

We recommend incorporating more experiential learning visits to events like Aadi Mahotsav into our academic programs. These engagements offer students valuable insights into sustainable design, cultural diversity, and community empowerment through design. By nurturing these experiences, we aim to cultivate socially responsible designers who honor and promote indigenous knowledge systems.



भारत भर के विभिन्न आदिवासी समुदायों के कारीगरों द्वारा लगाए गए स्टॉल
Stalls set up by artisans from various tribal communities across India

1.3.3 गोंडवाना कला प्रदर्शनी, बीकानेर हाउस का दौरा यात्रा की तिथि: 28 जनवरी, 2024

Visit to Gondwana Art Exhibition, Bikaner House

Date of Visit: January 28, 2024

परिचय

28 जनवरी, 2024 को हमारे समूह को बीकानेर हाउस, नई दिल्ली में गोंडवाना परियोजना प्रदर्शनी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गोंडवाना परियोजना मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया के प्रथम राष्ट्रों की जनजातीय कला को प्रदर्शित करने वाली एक अनूठी पहल है, जिसका उद्देश्य स्वदेशी संस्कृतियों का जश्न मनाना और अंतर-सांस्कृतिक प्रशंसा को बढ़ावा देना है।

Introduction

On January 28, 2024, our group had the pleasure of visiting the Gondwana Project exhibition at Bikaner House, New Delhi. The Gondwana Project is a unique initiative showcasing tribal art from Central India and Australia's First Nations, aimed at celebrating indigenous cultures and fostering cross-cultural appreciation.

आने का उद्देश्य

हमारी यात्रा का उद्देश्य मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया के स्वदेशी समुदायों की कलात्मक अभिव्यक्तियों का पता लगाना था, जैसा कि गोंडवाना परियोजना प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था। हमारा लक्ष्य जनजातीय कला के पीछे की विविध परंपराओं, कहानियों और तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल करना और इन कलाकृतियों में निहित सांस्कृतिक महत्व को समझना है।

Purpose of Visit

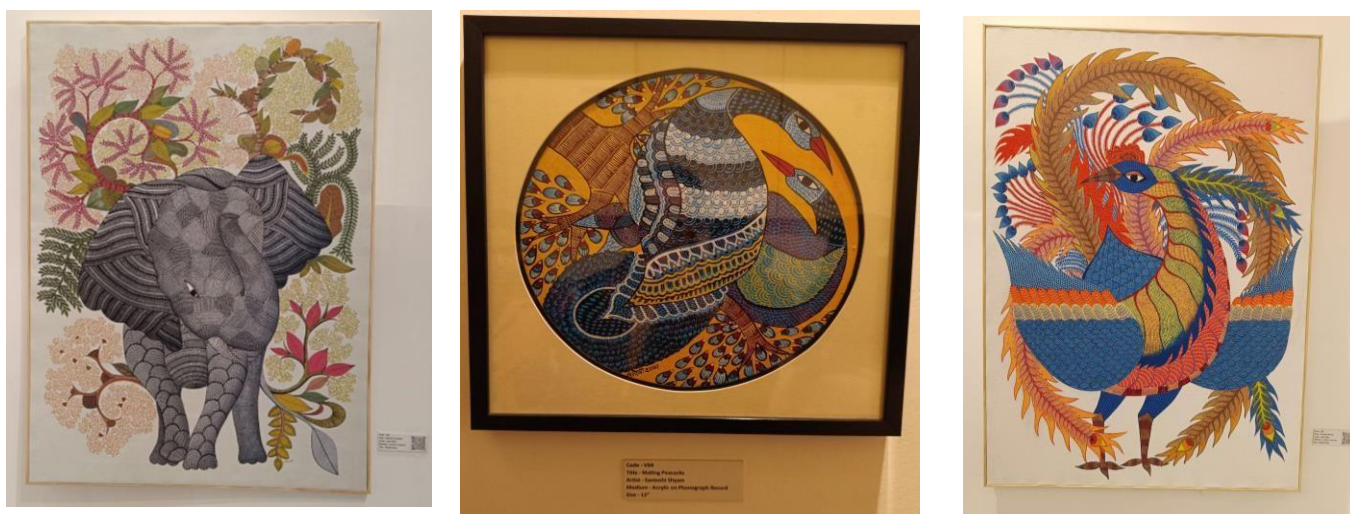
The purpose of our visit was to explore the artistic expressions of indigenous communities from Central India and Australia, as presented through the Gondwana Project exhibition. We aimed to gain insights into the diverse traditions, stories, and techniques behind tribal art and understand the cultural significance embedded in these artworks.

प्रदर्शनी अवलोकन

बीकानेर हाउस की प्रदर्शनी में मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाली कलाकृतियों का मनमोहक प्रदर्शन किया गया। क्यूरेटेड संग्रह में पेंटिंग, मूर्तियां, वस्त्र और मिश्रित-मीडिया इंस्टॉलेशन शामिल हैं, जो स्वदेशी रचनात्मकता और विरासत का व्यापक अवलोकन प्रदान करते हैं।

Exhibition Overview

The exhibition at Bikaner House featured a captivating display of artworks representing tribal communities from Central India and Australia. The curated collection included paintings, sculptures, textiles, and mixed-media installations, providing a comprehensive overview of indigenous creativity and heritage.



गोंडवाना कला प्रदर्शनी: मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाली कलाकृतियों का प्रदर्शन

Gondwana Art Exhibition: display of artworks representing tribal communities from Central India and Australia

मुख्य विशेषताएं

1. मध्य भारत की जनजातीय कला: प्रदर्शनी में गोंड, भील, बैगा और अन्य समुदायों सहित मध्य भारत के जनजातीय कलाकारों द्वारा आश्चर्यजनक कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। चित्रों की विशेषता जटिल पैटर्न, जीवंत रंग और प्रकृति, पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन का चित्रण था। बिंदुओं और रेखाओं जैसी पारंपरिक तकनीकों के उपयोग ने कलाकृतियों में गहराई और बनावट जोड़ दी।

2. ऑस्ट्रेलिया के प्रथम राष्ट्रों की कला: मध्य भारतीय जनजातीय कला के साथ-साथ, प्रदर्शनी में ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी और टोरेस स्ट्रेट आइलैंडर कलाकारों की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। कलाकृतियों में डॉट पेंटिंग और बार्क पेंटिंग जैसी अनूठी शैलियों का प्रदर्शन किया गया, जो भूमि से जुड़ाव, आध्यात्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक पहचान की कहानियों को दर्शाती हैं। प्रत्येक टुकड़ा स्वदेशी परंपराओं में निहित गहरे अर्थ रखता है।

3. सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संवाद: मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया की कलाकृतियों के मेल से सार्थक अंतर-सांस्कृतिक संवाद की अनुमति मिली। आगंतुकों को महाद्वीपों में कलात्मक शैलियों, प्रतीकवाद और विषयों में समानता और अंतर की सराहना करने का अवसर मिला, जिससे स्वदेशी संस्कृतियों की गहरी समझ को बढ़ावा मिला।

4. इंटरएक्टिव सत्र: प्रदर्शनी में इंटरैक्टिव सत्र भी पेश किए गए जहां आगंतुक स्वदेशी कलाकारों के साथ जुड़ सकते हैं, उनकी तकनीकों के बारे में जान सकते हैं और उनकी कलाकृतियों के सांस्कृतिक संदर्भों में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। इस संवादात्मक अनुभव ने कलात्मक प्रक्रिया और स्वदेशी कला में कहानी कहने के महत्व के बारे में हमारी समझ को समृद्ध किया।

Key Highlights

1. Tribal Art from Central India: The exhibition showcased stunning artworks by tribal artists from Central India, including Gond, Bhil, Baiga, and other communities. The paintings were characterized by intricate patterns, vibrant colors, and depictions of nature, mythology, and daily life. The use of traditional techniques like dots and lines added depth and texture to the artworks.

2. Art of Australia's First Nations: Alongside the Central Indian tribal art, the exhibition featured artworks by Aboriginal and Torres Strait Islander artists from Australia. The artworks displayed unique styles such as dot painting and bark painting, illustrating stories of connection to land, spiritual beliefs, and cultural identity. Each piece carried profound meanings rooted in indigenous traditions.

3. Cultural Exchange and Dialogues: The juxtaposition of artworks from Central India and Australia allowed for meaningful cross-cultural dialogues. Visitors had the opportunity to appreciate similarities and differences in artistic styles, symbolism, and themes across continents, fostering a deeper understanding of indigenous cultures.

4. Interactive Sessions: The exhibition also offered interactive sessions where visitors could engage with indigenous artists, learn about their techniques, and gain insights into the cultural contexts of their artworks. This interactive experience enriched our understanding of the artistic process and the significance of storytelling in indigenous art.



गोंडवाना कला प्रदर्शनी, बीकानेर हाउस में प्रख्यात वक्ता सरिता किंग के साथ बातचीत

Interaction with the Notable speaker Sarrita King at the Gondwana Art Exhibition, Bikaner House

अंतर्दृष्टि और सीख

गोंडवाना परियोजना प्रदर्शनी में हमारी यात्रा एक परिवर्तनकारी अनुभव थी। हमने मध्य भारत और ऑस्ट्रेलिया के स्वदेशी समुदायों के लचीलेपन, रचनात्मकता और सांस्कृतिक समृद्धि के बारे में गहन जानकारी प्राप्त की। कलाकृतियाँ स्वदेशी ज्ञान और दृष्टिकोण को संरक्षित करने और साझा करने के लिए शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करती हैं।

Insights and Learnings

Our visit to the Gondwana Project exhibition was a transformative experience. We gained profound insights into the resilience, creativity, and cultural richness of indigenous communities from Central India and Australia. The artworks served as powerful mediums for preserving and sharing indigenous knowledge and perspectives.

निष्कर्ष

बीकानेर हाउस में गोंडवाना परियोजना प्रदर्शनी कला की सार्वभौमिक भाषा और स्वदेशी संस्कृतियों के सम्मान के महत्व का एक प्रमाण थी। इसने विविध जनजातीय परंपराओं के अंतर्संबंध पर प्रकाश डाला और आपसी सम्मान और प्रशंसा को बढ़ावा देने के लिए अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आवश्यकता पर जोर दिया।

Conclusion

The Gondwana Project exhibition at Bikaner House was a testament to the universal language of art and the importance of honoring indigenous cultures. It highlighted the interconnectedness of diverse tribal traditions and emphasized the need for cross-cultural exchanges to promote mutual respect and appreciation.

1.3.4 पर्पल इवेंट, राष्ट्रपति भवन का दौरा/ Visit to Purple Event, Rashtrapati Bhawan



राष्ट्रपति भवन के 'पर्पल फेस्ट' कार्यक्रम में सार्थक ट्रस्ट द्वारा स्टॉल लगाया गया

Stall setup by Sarthak Trust at the 'Purple Fest' Event, Rashtrapati Bhawan

शीर्षक: 'पर्पल फेस्ट' कार्यक्रम

आयोजन की तारीख: 26 फरवरी, 2024

Title: The 'Purple Fest' Event **Date of Event:** 26 February, 2024

परिचय

26 फरवरी, 2024 को हमारे ग्रुप को भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा आयोजित 'पर्पल फेस्ट' में शामिल होने का अवसर मिला। इस उत्सव का उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) की उपलब्धियों और प्रतिभाओं का जश्न मनाना और मुख्यधारा के समाज में उनके एकीकरण को बढ़ावा देना है। सार्थक ट्रस्ट फाउंडेशन सहित विभिन्न गैर सरकारी संगठनों ने विभिन्न क्षेत्रों में दिव्यांगों के रचनात्मक कार्यों का प्रदर्शन करके भाग लिया।

Introduction

On 26 February, 2024, our group had the opportunity to attend the 'Purple Fest', organized by the Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. This festival aimed to celebrate the achievements and talents of persons with disabilities (PWDs) and promote their integration into mainstream society. Various NGOs, including the Sarthak Trust Foundation, participated by showcasing the creative work of PWDs in different domains.

आने का उद्देश्य

'पर्पल फेस्ट' में हमारी यात्रा का उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों के कलात्मक और अभिनव योगदान का पता लगाना और उसकी सराहना करना था। विशेष रूप से, हमारा ध्यान यह समझने पर था कि दिव्यांगों द्वारा डिजाइन और विकास कैसे बाधाओं को तोड़ सकता है और विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं को उजागर कर सकता है।

Purpose of Visit

Our visit to the 'Purple Fest' was intended to explore and appreciate the artistic and innovative contributions of persons with disabilities. Specifically, our focus was on understanding how design and development by PWDs can break barriers and highlight their capabilities in various creative fields.

घटना अवलोकन

'पर्पल फेस्ट' राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक जीवंत और समावेशी कार्यक्रम था, जिसमें पूरे भारत में पीडब्ल्यूडी के साथ काम करने वाले कई गैर सरकारी संगठनों और संगठनों के स्टॉल शामिल थे। प्रत्येक स्टॉल पर विकलांग व्यक्तियों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों और सेवाओं की एक विविध श्रृंखला प्रदर्शित की गई, जो उनके कौशल, प्रतिभा और उद्यमशीलता की भावना को प्रदर्शित करती है। लाइव प्रदर्शन, इंटरैक्टिव सत्र और आकर्षक प्रदर्शन के साथ माहौल प्रेरणादायक था।

Event Overview

The 'Purple Fest' was a vibrant and inclusive event held at Rashtrapati Bhawan featuring stalls from multiple NGOs and organizations working with PWDs across India. Each stall displayed a diverse range of products and services crafted by individuals with disabilities, showcasing their skills, talents, and entrepreneurial spirit. The atmosphere was inspiring, with live performances, interactive sessions, and engaging displays.

मुख्य विशेषताएं

1. सार्थक ट्रस्ट फाउंडेशन स्टॉल: हम सार्थक ट्रस्ट फाउंडेशन द्वारा आयोजित स्टॉल की ओर आकर्षित हुए। इस स्टॉल में विकलांग व्यक्तियों द्वारा डिजाइन और विकसित की गई कलाकृतियों, हस्तशिल्प और नवीन उत्पादों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की गई। हमने इन कृतियों के पीछे के प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ बातचीत की, उनकी रचनात्मक प्रक्रियाओं और व्यक्तिगत कहानियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

2. कला और हस्तशिल्प: इस कार्यक्रम में दिव्यांगों द्वारा बनाई गई पेंटिंग, मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन और अन्य हस्तनिर्मित वस्तुओं का मनमोहक प्रदर्शन किया गया। प्रत्येक टुकड़ा अद्वितीय दृष्टिकोण और कलात्मक

अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करता है, रूढ़िवादिता को चुनौती देता है और विविधता का जश्न मनाता है।

3. नवोन्मेषी उत्पाद: दिव्यांगजनों ने पर्यावरण-अनुकूल बैग, घरेलू सजावट के सामान, फैशन सहायक उपकरण और तकनीकी नवाचार जैसे नवोन्मेषी उत्पादों का प्रदर्शन किया। इन उत्पादों ने विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाले समाधानों को डिजाइन करने में दिव्यांगों की सरलता और अनुकूलन क्षमता पर प्रकाश डाला।

4. इंटरैक्टिव कार्यशालाएँ: आगंतुकों को पेंटिंग, शिल्प-निर्माण और डिजिटल कला में कौशल का प्रदर्शन करने वाले दिव्यांगों द्वारा आयोजित इंटरैक्टिव कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर मिला। इन कार्यशालाओं ने रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया और समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दिया।

5. सांस्कृतिक प्रदर्शन: इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत और थिएटर सहित दिव्यांगों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक प्रदर्शन भी शामिल थे। इन प्रदर्शनों ने न केवल मनोरंजन किया बल्कि विकलांगता के बारे में पूर्वकल्पित धारणाओं को भी चुनौती दी और विविध क्षमताओं वाले व्यक्तियों की प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

Key Highlights

1. Sarthak Trust Foundation Stall: We were drawn to the stall hosted by the Sarthak Trust Foundation. This stall presented an array of artworks, handicrafts, and innovative products designed and developed by persons with disabilities. We interacted with the talented individuals behind these creations, gaining insights into their creative processes and personal stories.

2. Art and Handicrafts: The event featured captivating displays of paintings, sculptures, pottery, and other handcrafted items crafted by PWDs. Each piece reflected unique perspectives and artistic expressions, challenging stereotypes and celebrating diversity.

3. Innovative Products: PWDs showcased innovative products such as eco-friendly bags, home decor items, fashion accessories, and technological innovations. These products highlighted the ingenuity and adaptability of PWDs in designing solutions that cater to diverse needs.

4. Interactive Workshops: Visitors had the opportunity to participate in interactive workshops conducted by PWDs, demonstrating skills in painting, craft-making, and digital art. These workshops encouraged creativity and fostered inclusive learning environments.

5. Cultural Performances: The event also featured captivating cultural performances by PWDs, including dance, music, and theater. These performances not only entertained but also challenged preconceived notions about disability and showcased the talents of individuals with diverse abilities.

अंतर्दृष्टि और सीख

'पर्पल फेस्ट' में हमारा अनुभव समृद्ध और ज्ञानवर्धक था। हमें विकलांग व्यक्तियों की रचनात्मकता, लचीलेपन और उद्यमशीलता की भावना की गहरी सराहना मिली। उनके नवोन्मेषी डिजाइनों और कलाकृतियों को प्रत्यक्ष रूप से देखने से हमें डिजाइन और विकास में समावेशी प्रथाओं को पहचानने और उनका समर्थन करने के लिए प्रेरणा मिली।

Insights and Learnings

Our experience at the 'Purple Fest' was enriching and enlightening. We gained a profound appreciation for the creativity, resilience, and entrepreneurial spirit of persons with disabilities. Witnessing their innovative designs and artworks firsthand inspired us to recognize and support inclusive practices in design and development.

निष्कर्ष

- 'पर्पल फेस्ट' ने रचनात्मक और उद्यमशीलता क्षेत्रों में विकलांग व्यक्तियों की असीमित क्षमता के प्रमाण के रूप में कार्य किया। इसमें समावेशी डिजाइन को बढ़ावा देने और दिव्यांगों को अपनी प्रतिभा और योगदान प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया गया। हम इस तरह के प्रभावशाली कार्यक्रम के आयोजन के लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय और सार्थक ट्रस्ट फाउंडेशन के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।
- यह रिपोर्ट डिजाइन और विकास के क्षेत्र में विकलांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण और रचनात्मक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 'पर्पल फेस्ट' कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालती है।

Conclusion

- The 'Purple Fest' served as a testament to the limitless potential of persons with disabilities in the creative and entrepreneurial spheres. It emphasized the importance of promoting inclusive design and providing platforms for PWDs to showcase their talents and contributions. We extend our gratitude to the Ministry of Social Justice and Empowerment and the Sarthak Trust Foundation for organizing such an impactful event.
- This report highlights the significance of the 'Purple Fest' event, focusing on the empowerment and creative achievements of persons with disabilities in the field of design and development.